''लोगों में फूट पड़ी''
(7:1–53)

यीशु को बहुत से शीर्षकों अर्थात नामों से जाना जाता है। ''प्रतापी मसीह,'' ''अतुलनीय मसीह,'' या विलियम बार्कले के शब्दों में कहें तो, ''सर्व–पर्याप्त मसीह'' जैसे नाम सबसे अच्छे तथा आकर्षित करने वाले हैं। परन्तु यीशु के अन्य विवरण भी सही और महत्वपूर्ण हैं। परन्तु उसे ''विवादित मसीह,'' ''फूट डालने वाला मसीह,'' या ''लोगों को बांटने वाला मसीह'' भी कहा जा सकता है, क्योंकि वह जहां भी गया वहां उसके कारण लोगों में तीव्र प्रतिक्रिया और बड़ी बहस हुई।

यूहन्ना 7 अध्याय में पहुंचकर, हमें यीशु की पहचान से जुड़ा महत्वपूर्ण प्रमाण मिलता है। यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले की गवाही, पानी को मय में बदलने का आश्चर्यकर्म, मन्दिर को शुद्ध करने, सामरिया में सुधार, अधिकारी के पुत्र और लंगड़े को चंगा करना, पांच हज़ार लोगों को खाना खिलाना और जीवन की रोटी का उपदेश हम पहले ही देख चुके हैं। इस सारी जानकारी से हमारा क्या सम्बन्ध है? अध्याय 7 और 8 यह दिखाकर कि भीड़ उसके दावों पर क्या प्रतिक्रिया करती थी हमें ''यीशु कौन है?'' जैसे प्रश्न को पूरी तरह समझने में हमारी सहायता करते हैं। कुछ लोगों ने यीशु में विश्वास किया, कुछ ने नहीं जबकि कुछ उसे मार डालना चाहते थे।

अध्याय 7 का आरम्भ मंडपों के पर्व के निकट आने पर यीशु के गलील में होने से होता है। मसीही लोगों में यह पर्व फसह की तरह प्रसिद्ध नहीं है परन्तु यीशु के समय यहूदियों में इसका बहुत महत्व था। ''बटोरन'' या ''झोंपड़ियों'' के पर्व से भी प्रसिद्ध, मंडपों का पर्व तीन बड़े वार्षिक यहूदी पर्वों में से एक था। यह पर्व फसह के लगभग छह माह बाद, मध्य अक्तूबर के आस–पास आता था। इस पर्व पर लोग गुत्थी हुई शाखाओं की झोंपड़ियां बनाते थे जिनमें वे एक सप्ताह तक रात को बाहर सोते थे। यह उन्हें यह याद दिलाने के लिए था कि जंगल में घूमते समय उनके पूर्वज एक बार तारों के नीचे सोए थे। क्योंकि यह पर्व कटनी के बाद आता था इसलिए यह अच्छी उपज होने के लिए धन्यवाद से भी जुड़ा था। मंडपों का पर्व आनन्द का समय होता था और सम्भवत: यहूदी बच्चों के लिए वर्ष का सबसे पसंदीदा समय होता था। गुडस्पीड ने इसका अनुवाद ''यहूदियों के इकट्ठे होने का त्यौहार'' के रूप में किया है।[1]

पर्व का दिन निकट आने पर, देश से बाहर रहने वाले यहूदी यरूशलेम के लिए रवाना

हो जाते थे। यीशु के भाइयों ने ''अपने तईं जगत पर प्रकट'' (7:4) करने का आग्रह करते हुए उसे पर्व में जाने के लिए उकसाया था। लगता है कि ''उसके भाई भी उस पर विश्वास नहीं करते थे'' (7:5), इसलिए वे उससे मज़ाक कर रहे थे। उनके कहने का भाव था कि ''गांव के इन लोगों के तेरे आस-पास घूमते रहने से तुझे लगता है कि तुझमें कोई विशेष बात है। तू यरूशलेम जैसे बड़े नगर में क्यों नहीं जाता, जहां अधिक पढ़े-लिखे लोग रहते हैं? फिर देखना कि कोई तेरी बात मानता है या नहीं!'' वे अभी भी यीशु को एक राजनीतिक व्यक्ति समझकर सांसारिक भाषा में उसका अर्थ निकाल रहे थे। पहले तो यीशु का जवाब पर्व में न जाकर गलील में रहने का था। वह जानता था कि यरूशलेम में उसकी जान को खतरा है (5:18; 7:1) और उसने पिता की समयसारणी को छोड़ किसी भी अन्य समयसारणी के अनुसार चलने से इन्कार कर दिया था (7:6, 8, 30)। इस कारण, उसने गलील में रहकर अपने भाइयों को पर्व में पहले जाने दिया।

अपने भाइयों के चले जाने के बाद, यीशु भी पर्व में गया, परन्तु वैसे नहीं जैसे उसके भाइयों ने सुझाव दिया था। वह यरूशलेम में चुपके से गया और उसने अपनी पहचान को गुप्त रखा।

''मेरा उपदेश मेरा नहीं''

सुसमाचार की अपनी पुस्तक में यहां से यूहन्ना इस बात पर ध्यान देने लगा कि मंडपों के त्यौहार के दौरान यीशु के उपदेशों को भीड़ कैसे ग्रहण करती थी। यीशु को हम नगर के आस पास चलते, एक अपरिचित व्यक्ति के रूप में दिखा सकते हैं जो यीशु नासरी के विषय में होने वाली चर्चाओं को सुनने के लिए रुक जाता है। इसके अलावा यहूदी अगुवे भी भयभीत होकर उसके साथ किसी और झगड़े का पूर्वानुमान लगाकर उसके आने की प्रतीक्षा कर रहे थे। लोगों की भीड़ यीशु पर दो धड़ों में बंटी हुई थी। कुछ लोग कहते थे, ''वह भला मनुष्य है,'' जबकि अन्य यह ज़ोर देते थे कि, ''वह लोगों को भरमाता है'' (7:12)। यह चर्चा डर डरकर चुपके से होती थी, क्योंकि लोग अपने शक्तिशाली अगुओं को इस बारे में सूचित कर देते थे। नगर में यह बात चारों ओर फैल गई थी कि शक्तिशाली लोग यीशु को मरवाना चाहते हैं और जो लोग उसका पक्ष लेंगे, उनका अन्त भी वैसा ही हो सकता है!

पर्व के बीच में कहीं, यीशु मन्दिर के आंगनों में गया जहां लोगों की भीड़ इकट्ठी हुई थी और उन्हें उपदेश देने लगा। यहूदी लोग उसकी समझ से हैरान थे और आश्चर्य कर रहे थे कि उसे ''बिन पढ़े विद्या कैसे आ गई?'' (7:15)।[2] यीशु ने ज़ोर देकर कहा कि यह शिक्षा उसकी नहीं बल्कि उसकी थी जिसने उसे भेजा। इसके अलावा यीशु ने अपने सुनने वालों को आश्वस्त किया कि जो कोई भी पिता की इच्छा को पूरा करना चाहता है, वह जान सकता है कि उसकी शिक्षाएं सच्ची हैं या नहीं (7:16-19): ''यीशु ने उन्हें उत्तर दिया कि मेरा उपदेश मेरा नहीं, परन्तु मेरे भेजने वाले का है। यदि कोई उसकी इच्छा पर चलना चाहे, तो वह भी इस उपदेश के विषय में जान जाएगा कि वह परमेश्वर की ओर से है, या मैं अपनी ओर से कहता हूं। ...''

आज्ञा मानने और विश्वास करने में एक गूढ़ सम्बन्ध है। एक लेखक ने इसे इस प्रकार व्यक्त किया है: ''केवल विश्वास करने वाला ही आज्ञा मानता है, और केवल आज्ञा मानने वाले का ही विश्वास होता है।''[3] इस सत्य को एक अंग्रेज़ी गीत ''ट्रस्ट एण्ड ओबे'' में बड़े सुन्दर ढंग से चित्रित किया गया है। इस गीत का हिन्दी अनुवाद इस प्रकार गाया जाता है:

उसका प्यार बे बयान
कौन करेगा बखान
यीशु प्यारे ने अपनी जान दी
उसकी उल्फ़त अजीब,
ज़ाहिर हम पर ग़रीब
ज़ाहिर सब पर जो मानते मसीह।[4]

यीशु ने यह ऐलान किया था कि जिस प्रकार विनम्र और आज्ञाकारी मन से हम विश्वास करते हैं, वैसे ही घमण्डी और विद्रोही मन परमेश्वर की उपेक्षा और उसे नकारने का कारण बनता है।

जब यीशु ने भीड़ के कुछ लोगों को उसे मरवाने की इच्छा करने के कारण डांट लगाई तो उन्होंने ऐसी किसी भी इच्छा से इन्कार किया और कहने लगे कि यीशु में दुष्टात्मा है (7:20)। अपने ढंग से वे कह रहे थे, ''तू तो पागल है!'' फिर भी, यीशु उनके विरुद्ध अपनी बात करते हुए लंगड़े आदमी को चंगा करने की अपनी बात कहता रहा,[5] जिस कारण पहली बार यरूशलेम के यहूदी अगुओं ने उसे मार डालना चाहा था (7:21-24)।

''मैं स्वर्ग से आया हूं''

यीशु से सामना होते रहने से भीड़ में उलझन बढ़ गई थी। कुछ लोग हैरान थे कि यीशु को जिसके बारे में इतना कुछ कहा गया था, मन्दिर में सरे-आम उपदेश देने से कोई भी नहीं रोक रहा था (7:25, 26)। यीशु को रोकने में यहूदी अगुओं के असफल रहने के कारण कुछ लोग हैरान थे कि शायद अगुवे भी इसी निष्कर्ष पर पहुंचे हैं कि यीशु सचमुच भविष्यवक्ता अर्थात मसीह था। अन्य लोग इस तथ्य से परेशान थे कि यीशु नासरत से था (7:27)। वे इस बात पर अड़े रहे कि मसीह के आने के स्थान का किसी को भी पता नहीं चलेगा। फिर, लोगों द्वारा यह मानने से कि यीशु पिता की ओर से था या उस दुष्ट की ओर से, हम भीड़ को बड़ी उलझन और संघर्ष में देखते हैं।

अगला लिखित कथन मन्दिर में लोगों की भीड़ द्वारा उठाए जाने वाले प्रश्न का उत्तर था। यीशु ने आस-पास के लोगों में खुले तौर पर यह ऐलान करते हुए कि उसे स्वर्गीय पिता की ओर से भेजा गया है ''पुकार कर कहा'' (7:28, 29): ''तुम मुझे जानते हो और यह भी जानते हो कि मैं कहां का हूं: मैं तो आप से नहीं आया परन्तु मेरा भेजने वाला सच्चा है, उसको तुम नहीं जानते ...।''

एक बार फिर यीशु बहुतों को ठोकर देकर और हर एक पर अपनी बात के सत्य या

असत्य होने का निर्णय लेने का दबाव बनाकर, लोगों को चौंका रहा था। इतना स्पष्ट सुनकर कि वह कौन था, कोई भी इस मनुष्य यीशु के बारे में तटस्थ नहीं रह सकता था!

''मेरे पास आकर पिओ''

यहूदियों के लिए, मन्दिर में यीशु की बातें परमेश्वर की निन्दा से कम ख़तरनाक नहीं थीं। ये लोग यीशु के इस दावे को कि वह परमेश्वर का पुत्र है, स्पष्ट समझ रहे थे। जिस कारण उन्होंने उसे गिरफ्तार करने की कोशिश की। परन्तु वे उसे गिरफ्तार नहीं कर पाए थे, और यूहन्ना के शब्द हमें फिर याद दिलाते हैं कि यीशु ने पिता की समयसारणी को छोड़ किसी दूसरी समयसारणी के अधीन होना अस्वीकार कर दिया था (7:30)। अगुओं को सबसे बड़ा भय इस अहसास से था कि अधिक से अधिक लोग यीशु में विश्वास करने लगे हैं (7:31)। फरीसियों ने लोगों को उसमें अपने बढ़ते विश्वास के बारे में चुपके-चुपके बातें करते सुनकर यीशु को गिरफ्तार करने के लिए मन्दिर के सिपाही भेजे (7:32)। फिर वे उसे तब तक पकड़ नहीं पाए जब तक वह स्वयं तैयार नहीं था और उसका समय अभी आया नहीं था (7:33-36)।

पर्व के अन्तिम दिन, यीशु फिर खड़ा हुआ और खुलेआम मसीह होने का दावा करने लगा। इस अवसर पर उसने अपने आपको जीवन के जल का स्त्रोत कहा। उसने सम्भवत: यह दावा उस समय किया जब मंडपों के पर्व के एक भाग के रूप में एक प्रसिद्ध प्रथा जगह बना रही थी। हर रोज़ याजक सिलोम के तल में जाता, सोने का एक घड़ा पानी से भरता और फिर इसे जुलूस के रूप में मन्दिर में लाता था। पानी को वहां परमेश्वर के धन्यवाद की भेंट के रूप में उंडेला जाता था।[6]

इस आनन्दमयी समारोह के चलते यीशु ने कहा, ''यदि कोई प्यासा हो तो मेरे पास आकर पिए। जो मुझ पर विश्वास करेगा, जैसा पवित्र शास्त्र में आया है, उसके हृदय में से जीवन के जल की नदियां बह निकलेंगी'' (7:37, 38)। इतनी ही महत्वपूर्ण वह बात है जो यहां यीशु के बारे में यूहन्ना ने लिखी: ''उस ने यह वचन उस आत्मा के विषय में कहा, जिसे उस पर विश्वास करने वाले पाने को थे; क्योंकि आत्मा अब तक न उतरा था; क्योंकि यीशु अब तक अपनी महिमा को न पहुंचा था'' (7:39)।

यीशु ने पर्व के दौरान अपनी शिक्षा को कठोर कर दिया था, इसलिए इसे सुनने वाले भी और अधिक तीखे हो गए थे। पर्व के अन्त में कुछ लोग कह रहे थे, ''सचमुच यही वह भविष्यवक्ता है। औरों ने कहा; यह मसीह है, परन्तु किसी ने कहा; क्यों ? क्या मसीह गलील से आएगा,'' जबकि दूसरे लोग कह रहे थे कि ''यह मसीह है'' (7:40, 41)। उस समय तक उनकी सरगर्मी गलील में उन पांच हज़ार लोगों के जोश जैसी थी जिन्होंने रोटियां और मछली खाई थी (6:14)। ये लोग यीशु को परमेश्वर द्वारा भेजे हुए के रूप में स्वीकार करने को तैयार थे। अन्य लोगों ने यीशु की बातों पर आपत्ति की थी, और कई इतने उत्तेजित हो गए थे कि वे उसे पकड़ने की तलाश में थे। एक अवलोकन में जो इस पूरे अध्याय को संक्षिप्त करता दिखता है, यूहन्ना ने लिखा, ''सो उसके कारण लोगों में फूट पड़ी''(7:43)।

महायाजकों के पास जाने के समय मन्दिर के अधिकारी खाली हाथ थे। वे, भी अब यीशु की आश्चर्यचकित करने वाली बुद्धि की बातों से डर गए थे। उन्होंने जाकर बताया, "कि किसी मनुष्य ने कभी ऐसी बातें न कीं" (7:46)। यह सुनकर वे अगुवे क्रोध से भर गए। महायाजकों और फरीसियों ने उन अधिकारियों को डांटा और उन्हें बताया कि केवल अज्ञानी और मूर्ख लोग ही यीशु के बहकावे में आए हैं। उत्तर में "नहीं!" सुनने की उम्मीद से अगुओं ने अधिकारियों से पूछा, "क्या तुम भी भरमाए गए हो? क्या सरदारों या फरीसियों में से किसी ने भी उस पर विश्वास किया है?" (7:47, 48)। हम फिर यूहन्ना रचित सुसमाचार में निकुदेमुस के दूसरी बार आने को देखते हैं।

निकुदेमुस ने यहूदी सभा के एक सदस्य के रूप में, आगे बढ़कर अपने साथियों को याद दिलाया कि व्यवस्था किसी व्यक्ति की बात सुने बिना उसे दोषी नहीं ठहराती (7:50, 51)। इससे यीशु में विश्वास का अंगीकार मान्य नहीं होता, फिर भी यीशु से मिलने के लिए रात के समय आने वाले परमेश्वर के इस कायर खोजी का यह एक साहसिक कदम था। स्पष्टतः निकुदेमुस का विश्वास यीशु में बढ़ा था; परन्तु अभी भी वह एक गुप्त चेला था क्योंकि वह यहूदी अगुओं से डरता था। निकुदेमुस की टिप्पणी के लिए उनका उत्तर तुरन्त और क्रोध से भरा हुआ था: "क्या तू भी गलील का है ..." (7:52)। वे तर्क नहीं दे रहे थे बल्कि प्रतिक्रिया व्यक्त कर रहे थे। वे सच्चाई को नहीं जानना चाहते थे बल्कि यीशु के बचाव में आने का साहस करने वाले हर ऐसे व्यक्ति को चुप कराना चाहते थे। उनका प्रश्न यह पूछने का एक ढंग था कि "क्या तू बुद्धू, मूर्ख, धर्मविरोधी है?" निकुदेमुस के दूसरी बार आने से वह अध्याय सही ढंग से समाप्त हो जाता है जिसमें यीशु को एक विवादित और फूट डालने वाले व्यक्ति के रूप में दिखाया गया है। अधिकतर लोग दुष्टता या घमण्ड के कारण फूट डालने वाले होते हैं, परन्तु यीशु में ऐसी कोई बात नहीं थी। सुसमाचार की इस पुस्तक के आरम्भ से ही, यूहन्ना ने घोषणा की थी कि यीशु लोगों को सच्चाई पर आधारित एक कठिन पसन्द चुनने के लिए विवश करता है (1:11,12)। अन्ततः, लोग या तो उससे प्रेम करते हैं या घृणा (7:7)। यीशु हम में से किसी को भी अनिर्णयात्मकता की घातक विलासिता में रहने की अनुमति देने से इन्कार करता है।

सारांश

अमेरिका के इतिहास में, अलामो का युद्ध कठोर निर्णय लेने का एक परम उदाहरण माना जाता है। 1836 में दो सौ से भी कम सैनिकों की एक टुकड़ी सैन एंटोनियो, टैक्सस में सेनापति सैंटा ऐना की अगुआई वाले छह हज़ार मैक्सिकी सिपाहियों के विरुद्ध डटी रही थी। दो सप्ताह तक उन्होंने इतनी बड़ी सेना से अलामो को बचाए रखा। फिर हमले से एक दिन पहले अर्थात 5 मार्च की रात, टैक्सस की टुकड़ी के सेनापति, विलियम बैरिट ट्रेविस ने अपने सिपाहियों की एक बैठक बुलाई। उसने उन्हें यह बताया कि उसे पता है कि आक्रमणकारी अगले दिन दीवारों को तोड़ देंगे और अपनी तलवार से भूमि पर एक रेखा खींच दी। उसने उसका साथ देकर अलामो की रक्षा करने वालों से उस रेखा को पार करने के लिए कहा।

एक-एक कर वे सभी रेखा पार कर गए। जिम बोवी नामक एक आदमी को जो एक गुदड़ी में लेटा हुआ था, बीमार होने के कारण रेखा के पार लाने के लिए कहा गया। 184 लोगों की टुकड़ी में से, केवल एक ने रेखा को पार करने से इन्कार कर दिया। अगले दिन अलामो की रक्षा करने वाले सभी सिपाही युद्ध में मारे गए। उस दिन रेखा पर कोई भी खड़ा नहीं था! उनके लिए निर्णय लेना आवश्यक था।

पिछले वर्ष किसी सुसमाचार सभा में एक कॉलेज के छात्र ने सुसमाचार को ग्रहण करने का निमन्त्रण स्वीकार किया। जो वाक्य उसने कहा, वह यूहन्ना 7 अध्याय के पन्नों से लिया गया हो सकता है। उसने एक कार्ड पर लिखा, "बहुत देर से मैं बाड़ पर बैठने का प्रयास कर रहा था, अन्त में यही पता चला है कि बाड़ है ही नहीं।" सचमुच, जब यीशु की बात होती है तो बिना निर्णय लिए बाड़ पर बैठने का कोई अचित्य नहीं है। क्या आपने उसके पक्ष में या उसके विरुद्ध निर्णय लिया है?

पाद टिप्पणियां

[1]द *बाइबल, ऐन अमेरिकन ट्रांसलेशन,* सं. जे. एम. पोविस स्मिथ एण्ड एडगर जे. गुडस्पीड (शिकागो: यूनिवर्सिटी ऑफ़ शिकागो प्रेस, 1939)। [2]प्रेरितों 4:13 में पतरस और यूहन्ना के विषय में महासभा के सामने उनकी दृढ़ता तथा आत्मविश्वास के कारण ऐसी ही टिप्पणी की गई है। [3]डियेट्रिच बोनहोफर, द *कॉस्ट ऑफ़ डिसाइपलशिप* (न्यूयॉर्क: मैकमिलन कं., 1937), 69. [4]डी. बी. टाउनर के गीत "ट्रस्ट एण्ड ओबेअ" का यह हिन्दी अनुवाद है। जिसका संगीत जे. एच. सैमिस ने दिया था। [5]देखिए 5:1-18. [6]द *इन्टरनेशनल स्टैण्डर्ड बाइबल इनसाइक्लोपीडिया,* संशो. संस्क., सं. ज्योफ़री डब्ल्यू. ब्रोमिले (ग्रैंड रेपिड्स, मिशी.: Wm.B. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., 1979),1:535 में आर. के. हैरिसन, "फीस्ट ऑफ़ बूथ्स।"